ISSN-2229-452X

भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका

भारतीय राजनीति विज्ञान परिषद् का अर्द्धवार्षिक प्रकाशन

वर्ष–नवम्, अङ्क:–प्रथम, जनवरी–जून, 2017

यस्मिन् यथा वर्तते यो मनुष्य–
स्तस्मिंस्तथा वर्तितव्यं स धर्मः।
मायाचारो मायया वर्तितव्यः
साध्वाचारः साधुना प्रत्युपेयः।।

कौशल किशोर मिश्र
सम्पादक

Scanned by CamScanner

विषय सूची

सम्पादकीय: कौशल किशोर मिश्र

1. उपयोगितावाद 21 वीं सदी में प्रासंगिक? 9-12
श्रीजी सेठ

2. बैगा जनजाति एवं विकास-मध्यप्रदेश के सन्दर्भ में 13-22
अनुपम शर्मा

3. राजनीतिक चिंतन की भारतीय दृष्टिः वैश्विक सम्भावनाएं 23-30
सुबोधकान्त नायक

4. भारतीय राजनीति के आध्यात्मिक चिन्तकः श्री अरविन्द 31-36
रेणु मिश्र

5. राजनीतिक विचारों का भारतीय दृष्टिकोण 37-40
शेखर सिंह, रीतू शाही

6. महाभारत में वर्णित विविध गीताओं में राजधर्मः एक अध्ययन 41-46
डॉली जैन

7. स्वामी विवेकानन्द का राष्ट्रवाद एवं युवा शक्ति 47-50
रेणू मित्तल

8. राजनीतिक चिंतन की भारतीय दृष्टि और गाँधी एवं नेहरू का योगदान 51-54
साधना पाण्डेय

9. कौटिल्य के राजनीतिक विचारों का भारतीय राजनीति पर प्रभाव 55-58
संजय कुमार झा

10. भारतीय राजनीतिक दर्शन का समन्वयवादी दृष्टिकोणः 59-62
अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के संदर्भ में
मनोज कुमार, अभय विक्रम सिंह

11. सहभागिता आधारित विकास की अवधारणा 63-68
अनीता देशपाण्डे

12. वैश्विक परिदृश्य में गांधीजी के शिक्षा चिन्तन की प्रासंगिकता 69-76
आभा सैनी, सुषमा सैनी

Scanned by CamScanner

भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका, वर्ष-नवम्, अङ्क: प्रथम, जनवरी-जून, 2017 ISSN-2229-452X

राजनीतिक विचारों का भारतीय दृष्टिकोण

शेखर सिंह
रीतू शाही

भारतीय राजीनीतिक चिन्तन के दृष्टिकोण से भारतीय राजनीतिक विचारों को कालक्रम के अनुसार विभक्त किया जा सकता है। प्राचीन काल से भारत राजनीतिक चिन्तन के सन्दर्भ में समृद्ध रहा है। जिसकी प्रमाणिक पृष्टि कोटिल्य द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' से भी होती है। यद्यपि कि कौटिल्य के पूर्व मनु तथा बाद में शुक्र ने भी प्राचीन भारत में राजनीतिक विचारों को आगे बढ़ाने में सराहनीय योगदान दिया है। मध्यकाल प्राचीन भारत के राजनीतिक चिन्तन की तुलना में कम प्रभावशील रहा। जिसके अनेक कारक रहे हैं। आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन का प्रारम्भ राजा राम मोहन राय से माना जाता है। राम मोहन राय ने तात्कालिक रूढ़िगत राजनीतिक सामाजिक व्यवस्था को वैज्ञानिक–तार्किक तथा बौद्धिक आधार दिया। इसलिए राम मोहन राय को आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन का अग्रदूत कहा जाता है। किन्तु भारतीय दृष्टिकोण से आधुनिक राजनीतिक विचारों का सशक्त प्रारम्भ महात्मा गांधी के अभ्युदय से माना जाता है। जो गांधीवादी विचारा धारा के रूप में न केवल भारतीय राजनीतिक विचारों को अपितु वैश्विक राजनीतिक विचारों को भी सकारात्मक रूप से को प्रभावित कर रहा है। आज समग्र रूप से गांधीवादी विचाराधारा वैश्विक राजनीतिक विचारों के विकल्प के रूप में सशक्त रूप से उपस्थित हैं।

आर्थिक सिद्धान्त-

महात्मा गांधी ने अपने आर्थिक विचारों को मानव चिन्तन के मूलभूत उद्देश्य के सन्दर्भ में विकसित किया है। गांधीवादी आर्थिक विचारों के अनुसार उत्पादन का लक्ष्य सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति होता है न कि व्यक्तिगत लालसा या लाभ का पोषण यह विचार धारा ऐसी अर्थ व्यवस्था का प्रतिपादन करती है। जो मानव को उसकी आवश्यकता पूरी करने में सहायक हो तथा वर्ग भेद को समाप्त करे। गांधीवाद का ट्रस्टीशिप सिद्धान्त अर्थ में नैतिकता को स्थापित करता है। इसके अनुसार व्यक्ति को स्वयं धन का स्वामी न समझकर ट्रस्टी समझना चाहिए। साम्यवाद के विपरीत गांधी जी पूंजी के जबरदस्ती (राज्य शक्ति द्वारा) वितरण के विरोधी थे। इनका मानता था कि इससे समाज में तनाव व हिंसा फैलेगी जो समाज की उदारता को नष्ट कर देगी। इस प्रकार भारतीय राजनीतिक चिन्तन के क्षेत्र में गांधी वादी आर्थिक विचारधारा अहिंसा, स्वराज और समानता पर आधारित है।

स्वदेशी -

महात्मा गांधी ने अपने आर्थिक विचारों का आधार स्वदेशी को बनाया। गांधीजी का मानना था कि भारत के लिए राजनीतिक आजादी ही पर्याप्त नहीं है अपितु आर्थिक आजादी भी उतनी महत्वपूर्ण है। इस आर्थिक आजादी को प्राप्त करने का एक मात्र उपाय उन्होंने स्वदेशी को बताया। गांधी जी के अनुसार स्वदेशी एक बृहद अवधारणा है। जो अर्थ से होती हुई राजनीति, संस्कृति तथा सम्पूर्ण समाज को आच्छादित करती है। स्वदेशी का तात्पर्य वस्तुओं का स्वनिर्माण उनका उपभोग तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार से है। गांधी जी का विचार था कि जनसंख्या बहुल भारत में स्वदेशी ही रोजगार उपलब्ध कराने का अमोघ अस्त्र साबित हो सकता है। महात्मा गांधी का यह

Scanned by CamScanner